विक्रम संवाद

पाक्षिक आलेख सेवा/नि:शुल्क वितरण के लिए

संपादक
महाराजा विक्रमादित्य शोधपीठ
बड़ला भवन, देवास रोड, उज्जैन 456010
फोन : 0734–2521499, 0755–2660407
Email : mvspujjain@gmail.com
vikramadityashodhpeeth@gmail.com
Web : www.mvspujjain.com

इस अंक में

पृष्ठ क्र. 1
विक्रमादित्य ने की थी न्यायपूर्ण समाज...

पृष्ठ क्र. 3
उज्जयिनी नृत्य नाट्य समारोह में भगवान...

पृष्ठ क्र. 5
बोलियों को अखिल भारतीय कवि सम्मेलन...

पृष्ठ क्र. 8
सोशल मीडिया एक्स पर ट्रेंड हुआ...

विक्रमादित्य ने की थी न्यायपूर्ण समाज की स्थापना : मुख्यमंत्र डॉ. मोहन यादव

भारतीय न्याय व्यवस्था का आरंभ वैदिक काल में हुआ जहाँ सभा और समिति जैसी संस्थाओं के माध्यम से विवादों का निपटारा किया जाता था। सम्राट विक्रमादित्य के समय यह प्रणाली और अधिक सशक्त हुई। हमारे लिए आज भी उनकी न्याय प्रणाली की प्रासंगिकता अत्यंत महत्वपूर्ण है, समय बदल चुका है लेकिन न्याय की अवधारणा वही है जो विक्रमादित्य ने स्थापित की थी। उन्होंने न्यायपूर्ण, निष्पक्ष और समान समाज की स्थापना की थी। यह बात माननीय मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने विक्रमादित्य का न्याय वैचारिक समागम के शुभारंभ अवसर पर कही। कार्यक्रम की अध्यक्षता कर मध्यप्रदेश उच्च न्यायालय, मुख्य न्यायाधिपति माननीय श्री सुरेश कुमार कैत ने कहा कि सम्राट विक्रमादित्य का शासन व्यवस्था प्रधान था, न कि व्यक्ति प्रधान। विक्रमादित्य का शासन तंत्र न्याय, प्रशासनिक दक्षता और सामाजिक समरसता पर आधारित था। विक्रमादित्य का शासन एक संगठित और सुव्यवस्थित प्रणाली पर आधारित था। सम्राट विक्रमादित्य का न्याय त्वरित और पारदर्शी था। उन्हें न्याय और सुशासन का प्रतीक भी माना जाता है तथा आज भी उनके न्याय की मिसाल दी जाती है।

उज्जैन में 1 से 3 मार्च 2025 की तिथियों में आयोजित वैचारिक समागम के उद्घाटन सत्र को संबोधित करते हुए मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा कि उज्जैन की धरा वैभव के साथ ही सम्राट विक्रमादित्य जैसे साहसी वीरों की भी जन्मदायनी है। उज्जैन एक समय तक ज्ञान, विज्ञान, कला, संस्कृति, न्याय, सुशासन, व्यापार, व्यवसाय का एक सर्वमान्य केन्द्र रहा है। सभ्यता और संस्कृति की जन्म भूमि भारत अनादि काल से ही अत्यंत वैभवशाली राष्ट्र है। भारत की उर्वरा भूमि ने पृथ्वीराज चौहान, राणा सांगा, सम्राट अशोक, महाराजा प्रताप, छत्रपति शिवाजी जैसे अनगिनत वीरों का मार्ग प्रशस्त करने का श्रेय जिस वीर को जाता है, वे है उज्जैन के चक्रवर्ती सम्राट विक्रमादित्य। विक्रमादित्य ने जो अदम्य

पराक्रम दिखाया वह किसी के बस की बात नहीं। गणतंत्र की स्थापना का श्रेय सम्राट विक्रमादित्य को है। उन्होंने जो दान दिया वह आज तक किसी ने नहीं दिया। उनका नाम सदैव अमर रहेगा। सम्राट विक्रमादित्यध का न्यायिक वैभव इतिहास में अमर है। भारत का इतिहास न्यास के आदर्शों से परिपूर्ण है। हम सभी ने सिंहासन बत्तीसी में बत्तीस पुतलियों के माध्यम से विक्रमादित्य के न्यायिक वैभव को पढ़ा और सुना है। वह संपूर्ण भारतीय जनमानस में आज भी एक प्रेरक कथा के रूप में जीवित है। विक्रमादित्य के शासन में न्यारय केवल एक विधिक प्रक्रिया नहीं था बल्कि यह समाज के सामाजिक और नैतिक दायित्वों को भी ध्यान में रखते हुए एक सशक्त प्रणाली थी, जो समाज को न्याय और सदाचार की दिशा में अग्रसर करती थी।

कार्यक्रम को सम्बोधित करते मुख्य न्यायाधिपति कैत ने कहा कि अपनी कुर्सी की शक्ति का उपयोग हमेशा समाज कल्याण, समाज हित में करना चाहिए। न्याय केवल दंड देने का माध्यम नहीं बल्कि समाज में नैतिकता और सामाजिक संतुलन बनाने के लिए होना चाहिए। हमारी वर्तमान न्याय प्रणाली प्राचीन न्याय प्रणाली पर ही आधारित है। उन्होंने वर्तमान में न्यायाधीशों की कमी की बात करते हुए कहा कि आज देश में लाखों प्रकरण न्यायालयों में लंबित है, इसका सबसे बड़ा कारण है न्यायालयों में न्यायाधीशों की कमी। अकेले मध्य प्रदेश में लगभग चार लाख चौसठ हजार प्रकरण लंबित है। वर्तमान में 53 न्यायाधीशों की व्यवस्था है लेकिन सिर्फ 34 न्यायाधीश ही प्रकरणों का निराकरण कर रहे है और शेष पद रिक्त है। उन्होंने कहा कि हमने राज्य और केंद्र सरकार को 85 न्यायधीशों की नियुक्ति का प्रस्ताव भेजा है।

इसके पहले श्री श्रीराम तिवारी, निदेशक, विक्रमादित्य शोधपीठ, श्री नरेश शर्मा, अध्यक्ष, शिप्रा लोक संस्कृति समिति एवं प्रो. अर्पण भारद्वाज, कुलगुरू, विक्रम विश्वविद्यालय द्वारा माननीय मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव जी का स्वागत एवं स्मृति चिन्ह भेंट किया गया।

मा. श्री राजेश कुमार गुप्ता, प्रधान जिला एवं सत्र न्यायाधीश एवं अध्यक्ष, जिला विधिक सेवा प्राधिकरण, उज्जैन श्री अशोक यादव, अध्यक्ष, जिला अभिभाषक संघ श्री रविन्द्र सिंह कुशवाह, संयोजक एवं शासकीय अभिभाषक द्वारा माननीय श्री सुरेश कुमार कैत, मुख्य न्यायाधिपति, मध्यप्रदेश उच्च न्यायालय का स्वागत एवं स्मृति चिन्ह भेंट किया। डॉ. प्रकाश विटनेरकर, अध्यक्ष, सोशल मीडिया इन्फ्लुएंसर प्रेस काउंसिल, एडवोकेट प्रखर पुराणिक, सह संयोजक, शोध संगोष्ठी एवं डॉ. अजय शर्मा, सह संयोजक, शोध संगोष्ठी द्वारा माननीय श्री अनिल वर्मा, न्यायमूर्ति, म.प्र. उच्च न्यायालय, खण्डपीठ ग्वालियर का स्वागत एवं स्मृति चिन्ह भेंट किया। माननीय श्री राजेश कुमार गुप्ता, प्रधान जिला एवं सत्र न्यायाधीश एवं अध्यक्ष जिला विधिक सेवा प्राधिकरण ने स्वागत भाषण एवं कार्यक्रम की रूपरेखा रखी। सत्र का संचालन श्री चन्द्रेश मण्डलोई, जिला विधिक सहायता अधिकारी, उज्जैन ने किया।

विदुषी अनुप्रिया देवताले की वायलिन प्रस्तुति

महाराजा विक्रमादित्य शोधपीठ द्वारा विक्रमादित्य, उनके युग, भारत उत्कर्ष, नवजागरण और भारत विद्या पर एकाग्र विक्रमोत्सव 2025 अंतर्गत पं. सूर्यनारायण व्यास संकुल, कालिदास अकादमी में अंतरराष्ट्रीय ख्याति प्राप्त विदुषी अनुप्रिया देवताले ने वायलिन के साथ अपनी प्रस्तुति दी। उन्होंने अपने वादन की शुरुआत राग भीमपलासी से की। राग भीमपलासी एक मधुर, शांति देने वाला और भावपूर्ण राग है। अनुप्रिया देवताले हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत में अपनी उत्कृष्टता के लिए जानी जाती हैं। उनका वादन सौम्यता, तकनीकी निपुणता और गहरी अभिव्यक्ति से भरपूर था। उन्होंने राग भीमपलासी की सूक्ष्मताओं को वायलिन पर बड़ी सुंदरता से ध्वनित किया। गायकी अंग की शैली में उनका वायलिन वादन नवाचार और परंपरा का सुंदर संतुलन था।

उन्होंने परंपरागत रागदारी संगीत को आधुनिक शैलियों के साथ संतुलित रूप में प्रस्तुत किया। उनके वादन में केवल तकनीकी दक्षता ही नहीं, बल्कि राग की गहरी संवेदनशीलता को अपने में समाहित किए हुए था। उनके साथ तबले पर संगत दे रहे थे गांधार और तानपुरे पर रश्मि थी। इसके पूर्व पुराविद डॉ. आर.सी. ठाकुर, डॉ. रमण सोलंकी, प्रो. प्रशांत पुराणिक, कवि दिनेश दिग्गज ने अनुप्रिया देवताले का पुष्पगुच्छ देकर स्वागत किया।

अनुप्रिया देवताले देश की उच्च श्रेणी की हिंदुस्तानी शास्त्रीय वायलिन वादिका हैं। उनकी अपनी एक अनूठी शैली है, जिसमें वे गायन और वाद्य लयबद्ध पैटर्न के तत्वों को मिश्रित करती हैं। इंदौर में जन्मी अनुप्रिया देवताले ने संगीत की शिक्षा प्रख्यात सरोद वादक उस्ताद अमजद अली खान और प्रसिद्ध सारंगी वादक पंडित रामनारायण जी से ग्रहण की है। भावनात्मकता और माधुर्यमय मौलिक शैली की धनी अनुप्रिया देवताले दुनियाभर के 40 देशों में प्रस्तुति दे चुकी हैं।

उज्जयिनी नृत्य नाट्य समारोह में भगवान श्रीराम, श्रीकृष्ण और उज्जयिनी गाथा का प्रदर्शन

महाराजा विक्रमादित्य शोधपीठ द्वारा विक्रमादित्य, उनके युग, भारत उत्कर्ष, नवजागरण और भारत विद्या पर एकाग्र विक्रमोत्सव 2025 अंतर्गत उज्जयिनी नृत्य नाट्य समारोह का शुभारम्भ 4 मार्च 2025 को हुआ। चार दिवसीय इस समारोह अंतर्गत भगवान श्रीराम, श्रीकृष्ण मेघ के मृदंग एवं उज्जयिनी गाथा का प्रदर्शन किया गया। पहले दिन मोहित शेवानी एवं दल द्वारा अयोध्या के राम मंदिर की संगीतमय गाथा को प्रस्तुत किया गया।

भारतीय जनमानस की आस्था में भगवान श्रीराम सर्वोपरि है। महाकाव्य रामायण और उसकी गाथाएँ इस देश के घर–घर में पढ़ी और गायी जाती है। श्रीराम की गाथा हर काल में अनेक ढंग और रूप में उल्लेखित होती रही है। प्रस्तुति में राम मंदिर की संघर्ष की कहानी जिसमें बलिदान, त्याग, तपस्या, धैर्य और अदम्य साहस की महागाथा को प्रदर्शित किया गया है। एक घंटे तीस मिनट की इस संगीतमय महागाथा में श्रीराम मंदिर संघर्ष के नायकों और नायिकाओं के किस्सों के साथ श्रीराम मंदिर के इतिहास को रेखांकित किया गया है। मंचन के दौरान कई वाद्य यंत्रों का उपयोग किया गया। समय–समय पर दोहों, चौपाइयों, भजनों और गीतों की प्रस्तुति भी होती है। मंच पर कहानीकार मोहित शेवानी, स्क्रिप्ट लेखन प्रबुद्ध सौरभ, गायक शुभम नथानी, अभिषेक बिरथरे तथा गायिका श्रेया एवं श्रीजा उपाध्याय थी।

समारोह के दूसरे दिन सुप्रसिद्ध नृत्यांगना समीक्षा शर्मा एवं दल द्वारा मेघ के मृदंग नृत्य नाटिका को प्रस्तुत किया। इस प्रस्तुति में मेघ के माध्यम से जीवन के छोटे–बड़े, सुख–दुख, आशा–उमंग और संत्रास के साथ व्यक्ति के सामाजिक दायित्व और देश के नव निर्माण में समवेत संकल्पों को छंदात्मक पृष्ठभूमि के साथ प्रस्तुत किया गया है। मेघ को केन्द्रित करते हुए बहुत सी नई उद्भावनाएँ इस नृत्य नाट्य में प्रेक्षकों के समक्ष रसात्मक रूप में प्रस्तुत की गयी हैं। मेघों के वृहद कल्पनाओं की इस प्रस्तुति में साहित्य और नृत्य दोनों का समावेश किया गया है और यह विशेष ध्यान रखा गया है कि साहित्य और नृत्य दोनों का सम्मान बरकरार रहें।

समीक्षा शर्मा कथक नृत्य के क्षेत्र में जाना माना नाम है। उन्होंने युवा कथक कलाकारों की श्रेणी में अपनी साधना से एक अलग पहचान बनाई है। एक ओर वह अच्छी नृत्यांगना हैं, वहीं दूसरी ओर शास्त्र पक्ष की भी अच्छी समझ रखती हैं।

मेघ के मृदंग कथक नृत्य नाट्य को ब्रजेन्द्र शरण श्रीवास्तव द्वारा लिखा गया है। इस प्रस्तुति में कथक नृत्यांगना समीक्षा शर्मा के साथ संगत करने वाले कलाकार थे–गायन एवं हारमोनियम पर जनाब शोएब, तबला जनाब जाकिर, बांसुरी अतुल शंकर, सितार जनाब महराब अली, सारंगी जनाब अमीर खान और डोलक पर विवेक धवन। कथक नर्तकों में महिमा यादव, मुस्कान शर्मा, अवनी बालिया, ईशा व्यास, सुमित कुमार

व मयंक पटवा। जबकि लोक नृत्य कलाकारों में विंती जैन, भावना कटारिया, विधि शर्मा, शेफाली, मयूरी डोड व विनोद राठौड़ शामिल थे। टेक्नीशियन मनन तथा प्रकाश व्यवस्था अतुल मिश्रा ने संभाली। कार्यक्रम का संचालन डॉ. वैशाली शुक्ला ने किया।

समारोह के तीसरे दिन जगरूप सिंह चौहान निर्देशित नाट्य श्रीकृष्ण उज्जयिनी की प्रस्तुति हुई। इस प्रस्तुति में श्रीकृष्ण के अवंती प्रवास के दौरान शिका गृहण, गौमती कुण्ड खुदाई, विदेशी आक्रांताओं से बचाना, श्रीकृष्ण सुदामा चने खाने की घटनाओं, मित्रवृंदा स्वयंवर–हरण आदि घटनाओं का सुन्दर समावेश किया गया है। श्रीकृष्ण उज्जयिनी नाटक श्रीकृष्ण के उज्जयिनी से सम्बन्धों को रेखांकित करता है। उज्जयिनी में श्रीकृष्ण, बलराम और सुदामा शिप्रा तट पर सान्दीपनि के आश्रम में आये। यहाँ वे केवल 64 दिन रहें। इस अल्प समय में उन्होंने तत्कालीन समस्त विद्याओं यथा शस्त्र, शास्त्र और कला का सैद्धान्तिक और व्यवहारिक ज्ञान प्राप्त कर लिया तथा गुरु दक्षिणा में प्रदान किया गुरु का वह पुत्र, जो तीर्थयात्रा के समय समुद्र में लुप्त हो गया था। श्रीकृष्ण की आठ पटरानियों में से एक मित्रवृंदा उज्जयिनी की राजकुमारी थी। श्रीकृष्ण के उज्जयिनी प्रवास काल में ही मित्रवृंदा और श्रीकृष्ण की लीलाओं का भी वर्णन है। लीला की पूर्णता श्रीकृष्ण और मित्रवृंदा के विवाह पर पूर्ण होती है।

उज्जयिनी नाट्य एवं नृत्य समारोह के अंतिम दिन उज्जयिनी गाथा का मंचन हुआ। इस प्रस्तुति में शास्त्रीय, कथक, भरतनाट्यम तथा प्रसंगों के अनुसार मालवी लोकनृत्य शैली को शामिल किया गया। इसमें उज्जयिनी के आदि इतिहास से लेकर आधुनिक उज्जैन तक का वर्णन है। पल्लवी किशन द्वारा निर्देशित इस प्रस्तुति में उज्जयिनी की पौराणिकता, भगवान शिव द्वारा त्रिपुरासुर वध एवं महाकाल की स्थापना, मातासती का भस्म होना, हरसिद्धि की स्थापना, समुद्र मंथन की कथा, सिंहस्थ महापर्व का वर्णन, गुरू सांदीपनि महिमा तथा श्रीकृष्ण की शिक्षा, उज्जैन और सम्राट विक्रमादित्य जैसे विषयों को नृत्य, नाट्य, संगीत के माध्यम से प्रस्तुत किया गया है। मंच का संचालन वैशाली शुक्ला ने किया।

बोलियों को अखिल भारतीय कवि सम्मेलन : कविताओं से विरासत का सम्मान, निमाड़ी में सरस्वती वंदना

महाराजा विक्रमादित्य शोधपीठ द्वारा विक्रमादित्य, उनके युग, भारत उत्कर्ष, नवजागरण और भारत विद्या पर एकाग्र विक्रमोत्सव 2025 अंतर्गत लोकरंजन – जनजातीय भाषा एवं बोलियों का अखिल भारतीय कवि सम्मेलन में जनजातीय भाषाओं समेत स्थानीय बोलियों– मालवी, हाड़ोती, मेवाड़ी, निमाड़ी, अवधी, बुन्देली के देश के जाने–माने कवियों ने भारतीय और प्राचीन कला, संस्कृति खासकर अपनी विरासत के सम्मान में रचनाओं को पढ़ा। इस मौके पर निमाड़ी में माँ सरस्वती का वंदन किया गया। मेवाड़ी और मालवी की कविताओं पर दर्शकों ने खूब ठहाके लगाए। इसके पूर्व विक्रम विश्वविद्यालय वरिष्ठ कार्य परिषद सदस्य राजेश सिंह कुशवाह, पुराविद डॉ. रमण सोलंकी ने अथिति कवियों का स्वागत किया। इस अवसर पर गीतकार दुर्गादान सिंह गौड़ का अभिनंदन पत्र प्रदान पर सम्मानित किया गया।

राजस्थान के कोटा से पधारे गीतकार दुर्गादान सिंह गौड़ जिन्हें हाड़ोती का नीरज कहा जाता है, उन्होंने हाड़ोती में गीत और गजल प्रस्तुत किये। उन्होंने पढ़ा मीठा गीत जवानी मीठी मीठा ढोला मारू, आ है म्हारी चांद कंवर थने हिवडे बीच उतारू। मंच पर उदरपुर के दिनेश बंटी ने मेवाड़ी रचनाओं से सभी को हँसाया। उन्होंने रचनाओं में कहा कई करां जी, जी रियां हाँ। पर जीणो, मरबा रे समान है। या बात वे लोग जाणै जी को मैरिज हाल क पास मकान है। उठावना तीये की बैठक पर कहा म्हारा दादाजी के स्वर्गवास पर गांव का अस्यो छटा –छटाया आदमी बैठबा आया।थांको काम ई। गांव म कोई भी मर जावै। वांकै बैठबा जाबा को।

सनावद के दीपक पगारे निमाड़ी में कहते है बाबूजी तम सहेर म जाई न निमाड़ी खऽ भूली गया। बिराणी सी नातों जोड्यो न घर की माड़ी खऽ भूली गया।बाराबंकी के विकास बोखल ने अवधी में कहा जनता कै सब उत्साह औ जुनून चला गा। वादा रहै मई का पूरा जून चला गा। सोचित है हमरे क्षेत्र का विकास कब होई, बुधुआ चुनाव जीता हनीमून चला गा।

शाजापुर के अशोक नागर ने मंच को प्रणाम करते हुए कहा कि कंई भभी दादा की तबियत ठीक हुई? हां.... बीरा अबे आराम होयो है,आज तो थोड़ा चल्या भी था।अच्छा कां तक गया था? ठेका तक गया था। झाबुआ के गजेन्द्र आर्य ने भीली में अपनी कविताओं का पाठ किया। उन्होंने पढ़ा लुग लुगाई हगला हब। हाबरिया घाबरिया हुई ग्या रे। बईड बईड खोदरे खोदरे। टापरा टापरा हुई ग्या रे। सम्मेलन का संचालन उज्जैन के कवि अशोक भाटी ने किया।

अंतर्राष्ट्रीय इतिहास समागम में के.के. मोहम्मद ने कहा- मंदिर-मस्जिद के विवादों से बचे देश के नागरिक

देशवासियों को मंदिर–मस्जिद जैसे विवादों में कतई नहीं पड़ना चाहिए, वरना देश सीरिया या अफगानिस्तान बन जाएगा, इसका आशय यह है कि वे धार्मिक विवादों को समाप्त कर देश में शांति, सौहार्द्र और विकास को प्राथमिकता दी जानी चाहिए। धार्मिक संघर्षों से देश को नुकसान होता है, जैसे कि सीरिया और अफगानिस्तान में हुआ, जहां धार्मिक और सांप्रदायिक हिंसा ने सामाजिक ताने–बाने को नष्ट कर दिया। यह बात प्रसिद्ध पुरातत्वविद केके मोहम्मद ने विक्रमोत्सव 2025 अंतर्गत अंतर्राष्ट्रीय इतिहास समागम के उद्घाटन अवसर पर कही। उन्होंने कहा कि अयोध्या में बाबरी मस्जिद के नीचे जो पिलर थे, उनमें कलश रूपी आकृतियां बनी हुई थीं। यही एक प्रमाण हमें हिंदू मंदिर होने के लिए संकेत कर रहा था। 1976–77 में प्रो. बीबी लाल, जो पद्मश्री, पद्मभूषण हैं, के अंडर में हमारी टीम ने राम मंदिर प्रोजेक्ट पर काम शुरू किया था। उस समय मस्जिद के ऊपरी और भीतरी तह तक का परीक्षण किया। हमने देखा कि मस्जिद के जितने पिलर यानी बेस थे, उनकी बनावट देखकर ही समझ में आ गया कि ये मंदिर के हैं, मस्जिद के नहीं। उन्होंने सुप्रीम कोर्ट के निर्णय का भी स्वागत किया और दूसरे पक्ष को दी गई जमीन का उल्लेख किया। कार्यक्रम का प्रारंभ दीप प्रज्वलन के साथ हुआ।

कार्यक्रम की अध्यक्षता इतिहास संकलन योजना के राष्ट्रीय महासचिव डॉ. बालमुकुंद पांडे ने की। डॉ. बालमुकुंद पांडे ने अपने उद्बोधन में कहा कि भारत की परंपराएं ही इतिहास की प्रमुख जड़ है जिसमें मौखिक वाचक परंपराओं में इतिहास को जीवित रखा है। क्योंकि पुरातत्व तो संपूर्ण समाज का नहीं हो सकता, वह किसी काल विशेष की सीमित घटनाओं का ही उल्लेख कर सकता हैं। किंतु समाजिक परंपराओं में हजारों वर्षों के इतिहास को आज भी जीवितत्ता प्रदान करती है। आपने भृर्तहरि की कथा में सम्राट विक्रमादित्य संबंधी विविध प्रमाण बताएं। कार्यक्रम के सारस्वत अतिथियों में भारतीय संस्कृति के बल्गा पुरूष विक्रमादित्य शोधपीठ के पूर्व निदेशक पद्मश्री डॉ. भगवतीलाल राजपुरोहित, विक्रम विश्वविद्यालय के कुलगुरु डॉ .अर्पण भारद्वाज, विक्रम विश्वविद्यालय कार्य परिषद के वरिष्ठ सदस्य राजेश सिंह कुशवाह, इतिहास संकलन समिति मालवा प्रांत के अध्यक्ष डॉ. तेजसिंह सेंधव, अधीक्षण अधिकारी भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण जबलपुर सर्कल के डॉ. शिवाकांत वाजपेई एवं हैदराबाद की डॉ. स्मिथा एस कुमार थे। डॉ. भगवतीलाल राजपुरोहित ने विक्रमादित्य की परंपरा को कथा के माध्यम से

प्रस्तुत किया। कुलगुरु डॉ. अर्पण भारद्वाज ने इतिहास को विज्ञान के साथ पढ़ने की बात कही। कार्यक्रम में अतिथियों का स्वागत वरिष्ठ पुराविद डॉ. रमण सोलंकी ने किया। संचालन प्रसिद्ध कवि दिनेश दिग्गज ने किया और आभार प्रदर्शन डॉ. प्रशांत पुराणिक ने ज्ञापित किया। प्रथम तकनीकी सत्र में डॉ. के.के. मोहम्मद ने पावरप्वाइंट प्रेजेंटेशन के माध्यम से ग्वालियर और मुरैना के मध्य स्थित बटेश्वर मंदिर के 126 मंदिरों के संरक्षण एवं पुनर्निर्माण को प्रस्तुत किया। उन्होंने बताया कि डाकुओं से पीड़ित क्षेत्र में मंदिरों के बिखरे पड़े प्रस्तरों के ढेर से पूरे मंदिरों को खड़ा करना अत्यधिक परिश्रम का कार्य था। जिसको की 20 वर्ष के समय में 100 शिव एवं विष्णु के मंदिरों को खड़ा कर दिया गया है। द्वितीय तकनीकी सत्र का प्रारंभ अटल बिहारी वाजपेई स्नातकोत्तर महाविद्यालय इंदौर के इतिहास विभाग के पूर्व विभागाध्यक्ष डॉ. जे.सी. उपाध्याय की अध्यक्षता में प्रारंभ हुआ। इस सत्र के मुख्य अतिथि डॉ. हर्षवर्धन सिंह तोमर प्राध्यापक इग्नू विश्वविद्यालय दिल्ली, डॉ. अतुल गौतम प्राध्यापक दिल्ली विश्वविद्यालय एवं विशेष अतिथि नटनागर शोध संस्थान सीतामऊ के निर्देशक डॉ. विक्रम सिंह भाटी थे। इस सत्र में डॉ. शिवाकांत वाजपेई द्वारा बांधवगढ़ सुरक्षित वन क्षेत्र में स्थित पुरावशेषों, शिव–विष्णु मंदिरों, प्रतिमाओं और बौद्ध गुफाओं के बारे में विस्तृत जानकारी प्रस्तुत की। डॉ. सुनीता एस कुमार द्वारा काकतीय वंश के शासकों के सौ खंबों के कल्याण सुंदर मंडपम एवं मंदिरों के पुरातत्व सर्वेक्षण और संरक्षण संबंधी जानकारियां पावर पॉइंट के माध्यम से प्रस्तुत की।डॉ. हर्षवर्धन सिंह तोमर ने अपने उद्‌बोधन में कहा कि संपूर्ण भारत का इतिहास संस्कृति समाज धर्म एवं अर्थव्यवस्था का बोध पुरातत्व से नहीं हो सकता। भारत का अधिकतम इतिहास कथाओं और किवदंतियों में संग्रहित है। नटनागर शोध संस्थान सीतामऊ मालवा के निदेशक डॉ विक्रम सिंह भाटी ने विक्रमादित्य के साक्षों को राजस्थान के विभिन्न ग्रंथालयों में जैसे बीकानेर जैसलमेर एवं जोधपुर के अभिलेखागार में सुरक्षित बताए। जो अभी तक और प्रकाशित हैं। डॉ. अतुल गौतम ने सामाजिक विज्ञान के अंतर्गत समाज में युग युगीन विचारों की व्यापकता पर प्रकाश डाला तथा सोशल मीडिया को भविष्य की विरूपताओं का इतिहास प्रतिपादित किया।

डॉ जेसीओ उपाध्याय ने बेहतर भारत में सांस्कृतिक विभिन्नताओं के साक्षों पर प्रकाश डाला। कार्यक्रम का संचालन डॉ. प्रीति पांडे ने तथा आभार डॉ. दीक्षा सीखने व्यक्त किया।

आर्ष भारत प्रदर्शनी का शुभारंभ

महाराजा विक्रमादित्य शोधपीठ द्वारा विक्रमादित्य, उनके युग, भारत उत्कर्ष, नवजागरण और भारत विद्या पर एकाग्र विक्रमोत्सव 2025 अंतर्गत शोधपीठ कार्यालाय परिसर, बिड़ला भवन में भारतीय ऋषि वैज्ञानिक परंपरा पर केन्द्रित आर्ष भारत प्रदर्शनी का शुभारंभ पद्मश्री डॉ. भगवतीलाल राजपुरोहित एवं वरिष्ठ पुरातत्वविद डॉ. आर.सी. ठाकुर ने किया। इस मौके पर महाराजा विक्रमादित्य शोधपीठ के निदेशक श्रीराम तिवारी, डॉ. रमण सोलंकी, वरिष्ठ कवि दिनेश दिग्गज सहित कई गणमान्य नागरिक उपस्थित थे। भारतीय ऋषि वैज्ञानिक परंपरा पर केन्द्रित आर्ष भारत प्रदर्शनी में 100 से अधिक ऋषियों, मनीषियों, महापुरूषों के चित्रों को देशभर के चित्रकारों ने तैयार किया है। यह प्रदर्शनी भारतीय ऋषियों द्वारा दिये गये वैज्ञानिक योगदान को बताती है और यह स्पष्ट करती है कि भारतीय वैज्ञानिक परंपरा कितनी समृद्ध थी।

सोशल मीडिया एक्स पर ट्रेंड हुआ विक्रमोत्सव 2025

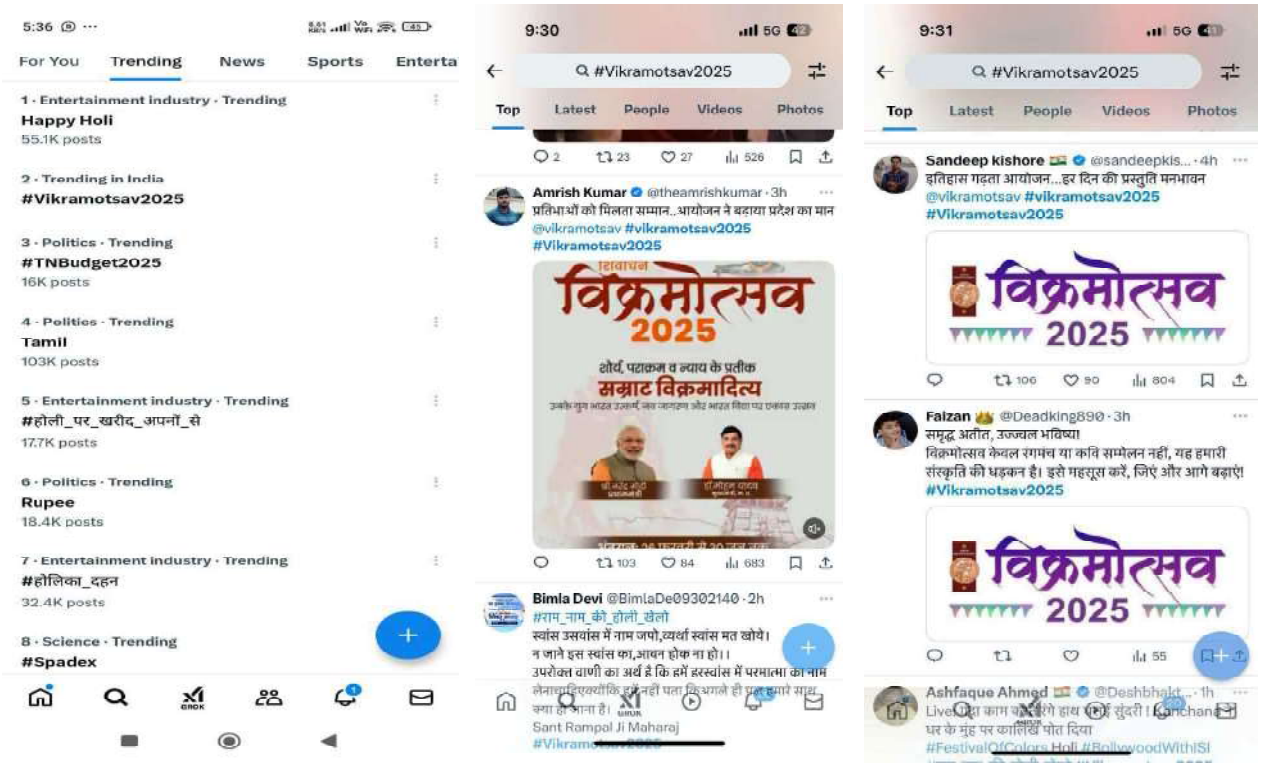

विक्रमोत्सव 2025 सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर 13 मार्च 2025 को राष्ट्रीय स्तर पर ट्रेंड हुआ। एक यूजर अमरीश कुमार ने लिखा प्रतिभाओं को मिलता सम्मान आयोजन ने बढ़ाया प्रदेश का मान। एक यूजर संदीप किशोर ने विक्रमोत्सव 2025 को शेयर करते हुए लिखा इतिहास को गढ़ता आयोजन. ... हर दिन की प्रस्तुति मनभावन।

इस ट्रेंड पर महाराजा विक्रमादित्य शोध पीठ के निदेशक श्रीराम तिवारी ने कहा कि विक्रमोत्सव 2025 एक आयोजन भर नहीं रह गया है यह लोक समाज का त्यौहार बन गया है। इसका सीधा उदाहरण आज सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर हमें देखने को मिला। यह आयोजन बाबा महाकाल की धरती से महाशिवरात्रि के दिन प्रारंभ हुआ और अपने विविध बहुआयामी गतिविधियों के साथ संपन्न होते हुए 125 दिनों तक चलेगा। उन्होंने बताया कि 26 फरवरी से 13 मार्च 2025 तक सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म यूट्यूब, इंस्टाग्राम, फेसबुक पर 87 लाख 8 हजार से अधिक लोग विक्रमोत्सव की गतिविधियों से जुड़ चुके है। निदेशक ने बताया कि विक्रमादित्य, उनके युग, भारत उत्कर्ष, नवजागरण और भारत विद्या पर एकाग्र विक्रमोत्सव 2025 भारतीय समाज को अपने इतिहास से परिचित कराने का प्रयास है। वर्ष 2006 से निरंतर विक्रमोत्सव का आयोजन किया जाता रहा है। विगत वर्षों में विक्रमोत्सव ने देश के सांस्कृतिक क्षेत्र में अपनी उत्सवधर्मी पहचान को बखूबी स्थापित किया है। इसमें ना केवल राष्ट्रीय बल्कि अंतर्राष्ट्रीय भागीदारी भी शामिल है। 125 दिवसीय आयोजन भारत और देश तथा दुनिया में आयोजित होने वाला सांस्कृतिक, सामाजिक और आर्थिक गतिविधियों का एक अनूठा उत्सव बन गया है।

इस महोत्सव में साहित्यिक, सांस्कृतिक गतिविधियाँ, ज्योतिर्विज्ञान, विचार गोष्ठियों, इतिहास एवं विज्ञान समागम, विक्रम व्यापार मेला, लोक एवं जनजातीय संस्कृति पर आधारित गतिविधियाँ, विक्रमादित्य वैदिक घड़ी के एप का प्रवर्तन, प्रदर्शनी, जल गंगा संवर्धन संरक्षण अभियान के साथ–साथ क्षेत्रीय, पौराणिक फिल्मों के महोत्सव, श्रीकृष्ण पर केन्द्रित विशेष फिल्मों के प्रदर्शन और प्रस्तुतियाँ सम्मिलित है। इसके साथ ही भारतीय कालगणना पर केन्द्रित विक्रम पंचांग का प्रकाशन एवं मध्यप्रदेश का सबसे बड़ा सम्मान सम्राट विक्रमादित्य राष्ट्रीय सम्मान विशेष आकर्षण का केंद्र है। मध्यप्रदेश सरकार अपनी समृद्ध विरासत को संरक्षित और संवर्धित करते हुए राज्य व देश के विकास के लिए संकल्पित है।

महाराजा विक्रमादित्य शोधपीठ, स्वराज संस्थान संचालनालय, संस्कृति विभाग, मध्यप्रदेश शासन के लिए बिड़ला भवन, देवास रोड, उज्जैन 456010 से प्रसारित। संपादक : श्रीराम तिवारी, समन्वयक : राजेश्वर त्रिवेदी

आलेख सेवा निःशुल्क वितरण के लिए। फोन : 0734–2521499, 0755–2660407 Email:mvspujjain@gmail.com, vikramadityashodhpeeth@gmail.com